प्रोह्म जो जो एक कि में. नटरान वृत्व हरियाणा के राज्यणाल की गृष्ट है कि में. नटरान वृत्वन मिल्ज प्रदर्गांद की प्राप्त के किया तिया उसके प्रवन्धकों, के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई क्रीडांगिक.

हिर्पिण के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बाछनीय समझते हैं;

प्रतिभावी प्रति क्षितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई करते हुए हरियाणी के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना में 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 हुए प्रीमिस्ना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245. दिनांक ७ फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की न्योपाल्ये फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-जीति उस्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद ने मुमंगत अधवा & runger and F. 44.

विमान । अपना, 1985

दिनांक । अगस्त, 1985

के राज्यपाल की राय है कि मैं. चैयरमेन मानिट कमेंटी हुनोह मण्डी पटीटी अतिसाह गुडगावा के श्रीमक श्री होती लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मार्गीमिक विवाद है

की दे कि हिर्माणी के राज्यपाल विवाद को त्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना दाष्टनीय समझते है:

इसलिए अब भौ बोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गर्नितयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणी के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना मं 5415−3−श्रम-68/15254, दिनांक 20 जूंने, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अप- 57/11245, दिनांक 7 परंबरी, 1958 द्वारा एक अधिसूचना की <mark>बाँरी 7 के प्रधीन गिटित श्रेम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-</mark> निर्णय के लिए निर्दिष्ट करेते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद ने मुसगत अथवा संबंधित् मामला है 🚟

िक्या श्री होती ुलाल कि सेवाओं का ममापन त्याबोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक ग्रंप्रगस्त, 1985 ै

सं⊱्रेमो वि∱जी जी ऐने /48 85/33154.--चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राजे है कि मै. व. सचिव हरियाणा राज्य बिजर्ला बोर्ड चुड़िगर्ढ (2) कार्यकार प्रशियत्ता हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड नारनोल (महिन्द्रगढ) के श्रमिक श्री विजय सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौगीगिक विवाद है;

श्रीर विकि हरियोण है के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिल्फि सन् भौगीनिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई यन्तियों का प्रयोग के ते हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ब्रधिमूचना में 5415-3-अम- 66,1 ° 54, दिनांक 20 जून 1968 के सीप पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिसचना की घार्र्य के अधीत प्रिक्त अमें स्थायालयं फरीदाबाद का विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उसने सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्याय⊸ निर्णयक्ति निर्ये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबुधित सामला है कि कि कि

क्या अर्रि विजय सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकशर है ?

सं विश्वी विश्वी हिर्मित्र हिरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं. हिरियाणा कोपरेटिव शुगर मिल लि.. रोहतक, लो असिक श्री जय प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक निवाद है;

श्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

- इस लिए, मुबे, <mark>प्रौद्योगिक विवाद भधिनियम, ३947 की धारा 10 की उपधारा (1) वे खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई। शक्तियो</mark>ं का प्रयोग फरते हुएँ हैरियाणा के राज्यपति इसके द्वारा सरकारी श्रीधमूचना मं. 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवस्बर, 1970 में∴ साथ गठित**्रेस कारी राश्चिमूचना की धारा ७ के प्र**धीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत मा दुससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायतिर्णय एवं पंचाट तीन माम में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तेषुर्देश्विम् के के बीच यो तो विद्यादयुस्त मामला है या उत्त विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

कि हैं हैं किया औं भूदी प्रकाश की सवाशों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?